om 6 delhi 1 A B C_Page 1 and 2 16/06/2015 17:40 Page 5

संकल्पों पर दें पहरा, अनुभव होगा सुनहरा

दुनिया वाले तो विश्वास रख बैठे हैं कि अगर समाज को सुधारना है या विश्व में सुख-शान्ति स्थापित करनी है तो राज्य सत्ता, धर्म सत्ता और विज्ञान सत्ता ही कुछ कर सकते हैं। लेकिन हमने तो देख लिया व अनुभव कर लिया कि यह कार्य कोई मनुष्य कर ही नहीं सकता। यह तो सर्वशक्तिमान भगवान का कार्य है जो वह अभी कर रहे हैं। क्योंकि सुख-शान्ति की जननी पवित्रता है और पवित्रता रूपी वरदान अथवा वर्सा एक परमपिता परमात्मा से ही मिल सकता है। यह निर्णय उन लोगों की बुद्धि नहीं कर सकी परन्तु हमने यह

समझ लिया, विषय विकारों को देख लिया, व्यक्तियों को, गुरुओं को, शास्त्रों को सबको देख लिया। अभी हमें यह निर्णय लेना है, इसी को सद्विवेक कहेंगे।

योग के गहरे अनुभव कैसे हों– इस विषय को पांच भागों में बांट सकते हैं। इसमें सबसे पहले हमारा ध्यान इस बात पर जाता है कि हम आत्मा हैं। यह हमारे योग की नींव है और आत्मा का हमें गहरा अनुभव करना है। परमपिता परमात्मा के जो गुण हैं और उनकी जो शक्तियां हैं, उनका भी हमें गहरा अनुभव करना है। गहरे अनुभव से मेरा यह अभिप्राय है कि आत्मा की जो योग्यताएं हैं अथवा उसकी जो शक्तियां हैं, जैसे हम कहते हैं कि मन, बुद्धि व संस्कार या उसकी स्मृति आदि, इनका गहरा अनुभव करना है। लोग समझते हैं कि ये मन, बुद्धि, संस्कार आत्मा से अलग हैं, लेकिन परमात्मा ने बताया कि ये आत्मा की शक्तियां हैं। जब हम इनका गहरा प्रयोग करेंगे तब हमारा अनुभव भी उतना ही गहरा होगा। आज हम इस बात को समाने रखते हैं और इस बात को हम विस्तार में लेंगे। परमात्मा ने हमेशा यह कहा है कि युक्ति से मुक्ति मिलती है और विधि से सिद्धि प्राप्त होती है। अगर हम कोई कार्य युक्तियुक्त करेंगे तो वो ठीक होगा और विधिपूर्वक करेंगे तो उससे सिद्धि होगी। विधि में जो बातें हैं उनका हमें पूरी तरह से प्रयोग करना चाहिए। अभी हम एक-एक बात पर चर्चा करेंगे।

पहला, आत्मा की जो शक्तियां हैं उनका गहरा प्रयोग। दूसरा, डीप साइलेन्स की स्टेज। हमारी साइलेन्स की स्टेज जितनी गहरी होगी, योग का अनुभव भी उतना ही गहरा होगा। तीसरा, योग का गहरा अनुभव करने के लिए और भी कारक हैं, उन्हें भी हमें अनुभव करना है। उनका प्रयोग हम नहीं करेंगे तो योग का गहरा अनुभव नहीं होगा। चौथा, योग का अनुभव करने के लिए जो नेगेटिव बातें हैं जैसे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि ये बाधा डालती हैं, इसको मिटाना है। कैसे ? इन नेगेटिव गुणों के जो विपरीत गुण हैं अर्थात् पाज़ीटिव हैं, जैसे घृणा को दूर करने के लिए स्नेह है, उसको धारण करना चाहिए। गहरे नेगेटिव को दूर करने के लिए हमारे पास गहरे पॉज़ीटिव नहीं होंगे तो हमारी प्रगति नहीं होगी। पांचवा, विधिपूर्वक करना। अगर हम विधिपूर्वक नहीं करेंगे तो हमें सिद्धि भी प्राप्त नहीं होगी।

आत्मा की विभिन्न शक्तियों का गहरा प्रयोग

इसमें सबसे पहले है इच्छा शक्ति। आत्म-चेतना की जो अभिव्यक्ति है वो है इच्छा शक्ति, जिसको अंग्रेजी में विल पॉवर कहते हैं। कोई भी कार्य करने से पहले हमारे मन में उस वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है। फिर उसको पाने के लिए सारे साधन जुटाकर हम वो कार्य करने के लिए जुट जाते हैं। जब तक हमारे मन में यह प्रबल इच्छा अर्थात् इच्छा शक्ति नहीं रहेगी कि मुझे योग में उत्कृष्ट अनुभव करना है, इस जीवन को योगी जीवन बनाना है, तब तक हम योग में गहरा अनुभव नहीं कर सकते। कर्मेन्द्रियों की इच्छाओं को जन्म-जन्मान्तर पूरी करते आये हैं। यह जो ईश्वरीय अनुभूति है, योग की जो गहराई है इसे हम संगमयुग में ही प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए मुझे योग की परमानुभूति करनी है– यह इच्छा, शक्ति रूप धारण करे और बाकी इच्छाओं को दूर कर दे। तब हम योग में गहरे अनुभव गहरे अनुभव कर पाएंगे।

संकल्प शक्ति

संकल्प शक्ति जितनी गहरी होगी हमारा योग भी उतना ही गहरा होगा। इसका बहुत कनेक्शन है। हमारा संकल्प जितना पॉवरफुल है या हमारी विचार शक्ति जितनी शक्तिशाली है या हमारी मनन शक्ति जितनी शक्तिशाली है उतना हमारा योग भी पॉवरफुल होगा। मन को आत्मा की विशेष शक्ति कहते हैं। जितनी हमारे में स्पष्टता होगी, व्याकुलता नहीं होगी, उतना हमारा संकल्प शक्तिशाली होगा।

अगर मन एकाग्र हो, विचार एक ही हो तब वह एक विचार शक्तिशाली रहता है। अगर उस विचार के साथ दूसरा और मिल जाये तो वह पहले वाला विचार हल्का पड़ जायेगा, निर्बल पड़ जायेगा। अगर हमारा संकल्प एक ही होगा, वह शिव बाबा की तरफ ही होगा अथवा आत्मा की तरफ ही होगा तो वह शक्तिशाली होगा। अगर एक विचार शिव बाबा का आयेगा, दूसरा विचार दुनियावी आयेगा तो हमारा योग शक्तिशाली नहीं होगा। इसका परिणाम यह होगा कि हमारा अनुभव गहरा नहीं होगा ।

बुद्धि शक्ति

निर्णय शक्ति अर्थात् बुद्धि शक्ति भी शक्तिशाली होनी चाहिए। अगर यह शक्तिशाली नहीं होगी तो हमारा योग भी शक्तिशाली नहीं होगा।

बुद्धि के शक्तिशाली होने का मतलब क्या है?

सांसारिक रूप से हमें जो देखना था, समझना था समझ लिया, हमे जो अनुभव करना था कर लिया। दुनिया वाले तो विश्वास रख बैठे हैं कि अगर समाज को सुधारना है या विश्व में सुख-शान्ति स्थापित करनी है तो राज्य सत्ता, धर्म सत्ता और विज्ञान सत्ता ही कुछ कर सकते हैं। लेकिन हमने तो देख लिया व अनुभव कर लिया कि यह कार्य कोई मनुष्य कर ही नहीं सकता। यह तो सर्वशक्तिमान भगवान का कार्य है जो वह अभी कर रहे हैं। क्योंकि सुख-शान्ति की जननी पवित्रता है और पवित्रता रूपी वरदान अथवा वर्सा एक परमपिता परमात्मा से ही मिल सकता है। यह निर्णय उन लोगों की बुद्धि नहीं कर सकी परन्तु हमने यह समझ लिया, विषय विकारों को देख लिया, व्यक्तियों को, गुरुओं को, शास्त्रों को सबको देख लिया। अभी हमें यह निर्णय लेना है, इसी को सद्विवेक कहेंगे। सत्य-असत्य को, पाप-पुण्य को, अच्छाई-बुराई को समझकर फैसला कर लें। जितनी हमारी बुद्धि पक्की होती जायेगी, यह दुनिया पराई लगेगी। इस प्रकार निर्णय शक्ति का प्रयोग करें। जितना-जितना बुद्धि को समेटकर एक शिव बाबा की याद में लगायेंगे उतना योग में गहरा अनुभव होगा। करना, जो कार्य है उसको पूरा करना इत्यादि उसकी विशेषतायें होंगी। योगी का हर कार्य परिपूर्ण होता है और समय से पहले होता है। -ब्र.कु. जगदीश हसीजा

-क्रमशः

रूरा-उ.प्र.। 'किसान महासम्मेलन' के दौरान सांसद देवेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति। साथ हैं ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. राजेन्द्र,हरियाणा व अन्य।

मुज़फ्फरनगर-केशवपुरी(उ.प्र.)। ''सम्बन्धों में समरसता'' विषयक कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.जयन्ती, ब्र.कु.राकेश व अतिथिगण।

भवानीगढ़-पंजाब। भारतीय योगा संस्थान में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. राजिन्दर। मंचासीन हैं भारतीय योगा संस्थान के प्रधान कृष्ण कुमार, मार्केट कमेटी के चेयरमैन सरदार रणवीर सिंह व अन्य।

दिल्ली-लाजपत नगर। 'रोल ऑफ सीरिच्युअलटी इन एजुकेशन' कार्यक्रम में उपस्थित हैं एन.आई.एच.एच. के डप्युटी डायरेक्ट डॉ. वी.पी. शाह, नवीन नंदा, ब्र.कु. जया, ब्र.कु. मीता, ब्र.कु. अमर केश व अन्य।

दिल्ली-आर.के. पुरम। ''स्वच्छ मन स्वच्छ भारत'' अभियान के दौरान गुड़गांव के आर.के.पब्लिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रम के बाद समूह चित्र में प्रिन्सीपल सुब्रत जी, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. रत्नाकर व टीचिंग स्टाफ।

भैरहवा-नेपाल। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सभासद एवं पूर्व मंत्री दीपक बोहरा, ब्र.कु. शान्ति, ब्र.कु. भूपेन्द्र, निर्देशक ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. तृप्ति, व्यापार मंडल के अध्यक्ष विष्णु शर्मा, उद्योगी नारायण अग्रवाल तथा अन्य।